E-CONTENT

SUB. – ELEMENTS OF ART

BY – DR. REKHA SHARMA
ASSOCIATE PROF. DRG & PTG
T.R.K.M., ALIGARH

ELEMENTS OF ART
कला के तत्व

मानव के लिए किसी भी कृति को पूर्ण करने लिये कला के प्रमुख तत्वों की जानकारी होना परम आवश्यक है। सृजित कृति निम्न तत्वों की सहायता से ही पूर्णता को प्राप्त होती है।

कला के मुख्य छः तत्व हैं जो निम्न प्रकार हैं –

1-Line, 2-Colour, 3-Tone, 4-Texture, 5-Space a Form

1. **रेखा (Line)** – रेखा दो बिन्दुओं या दो सीमाओं के बीच की दूरी है जो बहुत सूक्ष्म होती है और गति को दिशा निर्देश करती है।

   रेखा किसी चित्र का विशेष युग है। रेखाओं के भिन्न–2 प्रभाव होते हैं। रेखा की प्रखरता में अस्पष्टता, दृढ़ता व सामीरय प्रकट होता है। वहाँ कोमल एवं लचकदार रेखायें सुकुमारता, मृदुता एवं दूरी को प्रकट करती है। इसी प्रकार अस्पष्ट एवं टूटी–फूटी रेखायें कमजोरी तथा अति दूरी का भाव लिये रहती है।

   रेखाओं के कुछ सामान्य प्रभाव होते हैं, जिसका सम्बन्ध हमारी मनोदशाओं से होता है। **रेखीय प्रभाव** निम्न प्रकार है –

   1. **सीधी लम्बवत रेखा (Vertical Line)** – ये सीधी लम्बवत् या खड़ी रेखायें गौरव शक्ति, स्थायित्व, शान्तयित्वता एवं आकांक्षा का प्रभाव व्यक्त करती है।

   2. **सीधी पड़ी रेखा (Horizontal Line)** – यह रेखा, लम्बवत् रेखा को आधार प्रदान करती है। पड़ी हुयी रेखा का प्रभाव ..... स्थिरता, मौन तथा संतुलन आदि है।

   3. **कर्णवत् रेखायें (Diagonals)** – ये रेखायें नाटकीय उत्तेजना, बैचेनी, व्याकुलता आदि का प्रभाव दर्शाती है।

   4. **कोणीय रेखायें (Angle)** – ये रेखायें असुरक्षा, अस्पष्टता, व्याकुलता, संघर्ष आदि का प्रभाव दर्शाती हैं।

5. **चक्राकार रेखायें (Spiral Line)** – उत्तेजना, शक्ति एवं गति दर्शाती हैं।

6. **प्रवाही (Rhythms Line)** – ये रेखायें गति, लावण्य एवं माधुर्य आदि दर्शाती है।

रेखांकन के प्रकार – रेखांकन के निम्न प्रकार हैं –

1. **स्वतंत्र रेखांकन (Free Drawing)** – इसने पहली क्रिया किसी वस्तु को देखने की होती है, तत्पश्चात् मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव को रेखांकित करना होता है।

2. **स्मृति रेखांकन (Memory Drawing)** – यहाँ आकृति का पूर्ण परिचित रूप बिना देखे यथावत् चित्रण करना होता है।

3. **प्रतिरूपात्मक रेखांकन (Repersectational Drawing)** – इसमें हम जैसा देखते हैं, वैसा ही बनाने का प्रयत्न करते हैं। रेखाओं की सहायता से छाया, प्रकाश एवं क्षय वृद्धि (Persepactive) का प्रभाव दिखाया जा सकता है।

4. **यांत्रिक रेखांकन (Mechanical Drawing)** – इस प्रकार की रेखायें यन्त्रों की सहायता से नहीं तुली होती हैं। इनका कलात्मक प्रभाव नहीं होता। इनका प्रयोग केवल रूप के निर्माण में सहायता लेना होता है।

5. **प्रकृति रेखांकन (Nature Drawing)** – इसके अन्तर्गत पुष्प, पत्र तथा फल आदि का अंकन किया जाता है। एक फूल फल को भी अंकन किया जा सकता है।

6. **वस्तु रेखांकन (Object Drawing)** – वस्तुओं के एक समूह को सामने रखकर उसमें से कुछ वस्तुओं का संयोजन कराना चाहिये। जो वस्तु पास हो उसका रेखांकन गहरा और पीछे वाली वस्तुओं का अंकन हल्का होता जायेगा।

2. **रूप का आकार (Form)** – चित्र भूमि पर अंकन प्रारम्भ करते ही रूप का निर्माण आरम्भ हो जाता है। रूप सृजन के साथ ही चित्र भूमि सक्रिय हो

जाती है। चित्र भूमि सक्रिय रूपों एवं सहायक आकारों में विभक्त हो जाती है।

परिभाषा – रूप वह स्थान है, जिसका अपना निश्चित आकार तथा वर्ण होता है। साधारणतः वस्तु की आकृति को रूप कहते हैं।

रूप का वर्गीकरण (Classification of Forms) – साधारणतः रूप दो प्रकार के हो सकते हैं। 1–नियमित एवं 2–अनियमित

1. **नियमित रूप (Symmetrical Form)** – नियमित आकार अथवा रूप को अर्द्धभाग शेष का ही विलोम होता है। जैसे वृत्त, घन, गिलास आदि। इन आकारों में बौद्धिक सृजनता कम होती है।

2. **अनियमित रूप (Asymmetrical Form)** – अनियमित रूप का अर्द्धभाग शेष भाग से मिलता–जुलता नहीं होता है। जैसे–विषमकोण चतुर्भुज, त्रिभुज आदि।

रूप के प्रभाव – रूप के भी अनेक प्रभाव होते हैं –

1. आयताकार (Rectangular) – ये शक्ति, स्थायित्व तथा एकता का भाव प्रदर्शित।
2. त्रिभुजाकार (Triangular) – शाश्कतता, सुरक्षा तथा विकास
3. विलोम त्रिभुजाकार (Reverse Triangular) – लिप्तता, अशान्ति
4. अण्डाकार (Ovals) – लावण्य, सौन्दर्य, नित्यता, सृजनात्मकता
5. वृत्ताकार (Circular) – पूर्णता, आकर्षण, गति, विशालता, समानता आदि

रूप में विविधता – रूप में विविधता चित्रकार की योग्यता पर निर्भर करता है। राक्षस, देवता एवं साधारण मनुष्य के रूप में विविधता प्रमाण में अन्तर द्वारा उत्पन्न की जा सकती है।